श्री सीता शतनाम

छं०-श्री सीता सत नाम काम प्रद सतमत सार विचारी।
वदत बेद बानी नित नूतन अद्भुत स्वाद निहारी॥
श्री जानकी जानि जीवन श्री सीता नाम सदारी।
(श्री) युगलानन्य शरन स्वामिनि की कृपा प्रमोद अपारी॥१॥

१ २ ३ ४
रामा रतिवर्द्धनी रसेसा राघव प्रान पियारी।
५ ६ ७ ८
रास रंग दरसनी रमन मन रंजनि जनक दुलारी॥
९ १० ११ १२ १३ १४ १५
राग रूप रस जस सुख सदना शशि वदना सुकुमारी।
१६ १७ १८
(श्री) युगलानन्य शरन रमनी रति मान विमोहन वारी॥२॥
१९ २० २१ २२
कोक केलि पंडिता मंडिता कलावती कमनीया।
२३ २४ २५
कमल प्रिया कोमला कोकनद सदृश सुदृग बरनीया॥
२६ २७ २८ २५
कामा कांतमती कमला कर पूजित पद रमनीया।
३० ३१
(श्री) युगलानन्य शरन संसृति दव दारुन दुख दमनीया॥३॥
३२ ३३ ३४ ३५ ३६
भव्य भावदा भूरि भलाई बधू रसिक रघुराई।
३७ ३८ ३९
भाल विभूषन विशद भूषिता निदूषिता सदाई॥
४० ४१ ४२ ४३
भोग भूति भूतल भवभामिनि पद वन्दिता सोहाई।
४४ ४५
(श्री) युगलानन्य शरन भजनीया भजन भावना दाई॥४॥

चामीकर तन तेज[४६] निन्दिता चारु चातुरी[४७] रचना।
चमत्कारिणी[४८] चित्त हारिणी[४९] चांद चमक[५०] चय वचना॥
चंदन चाँद चाँदनी[५१] चपला चाहे चित विच[५२] सचना।
(श्री)युगलानन्य शरन चशमों दी ज्यौति जगमगति[५३] अचना॥५॥
सिया[५४] सलोनी[५५] सहज सुहावनि सारँग[५६] नयनी[५७] वामा।
शरनपालिनी[५८] शुभ गुन[५९] खानी कमला केलि ललामा[६०]॥
समीचीन[६१] सज्जन मन रंजनि[६२] सरल सुभाव[६३] सुधामा।
(श्री) युगलानन्य स्वामिनी सबकी श्री सीता नव वामा[६४]॥६॥
मिथिला मोदकरी[६५] मिथिला पति नंदनि[६६] नवला[६७] नारी।
गिरिजा पूजन तत्पर[६८] पति पद प्रेम परा[६९] छविधारी॥
रघुनंदन कल क्रोड़[७०] विलासिनि सुख[७१] रासिनि उजियारी[७२]।
(श्री) युगलानन्य सुनैना रानी सुता[७३] सनेह सँवारी॥७॥
श्री दशस्यन्दन भूप[७४] पतोहू परम माधुरी[७५] सरिता।
सोम बंस[७६] जीवनी जानकी[७७] जग वंदिता[७८] सु चरिता॥
कौतुक सदन सोभिता तरुनी[७९] नित्या गुन गन भरिता।
(श्री) युगलानन्य शरन संपति सद[८०] दानी फलन[८१] सुफरिता॥८॥
दृगजा कूल कलोलनि[८२] रसिका[८३] कनक भवन[८४] भल भ्राजी।
नव नागरि[८५] गुन आगरि[८६] प्रीतम प्रान प्रिया[८७] सुख साजी॥
श्रुतिकीरति उर्मिला मांडवी मधुर हास[८८] लखि राजी।
(श्री) युगलानन्य शरन सुन्दर लावन्यलता[८९] रस राजी॥९॥
मंदस्मिता[९०] मनोज्ञ माननी मान प्रहार[९१] प्रवीना।
प्रेम मधुर आसन[९२] आसीना छविनिधि पय पिय मीना॥

माननीय मानस[९३] मरालिका कलित कञ्जकर[९४] बीना।
(श्री) युगलानन्य शरन सु कामदा[९५] कादंबिनी[९६] नबीना ॥१०॥

श्री प्रमोदन बन कुञ्ज[९७] विहारिनि रसिक विहारी संगिनि।
झूलन गीत परायन निज मुद[९८] सखिन प्रदायनि रंगीनि॥
लज्जावती रसीली ललना अद्भुत[९९] नेह तरंगिनि।
(श्री) युगलानन्य शरन सीमा सौभाग्य[१००] सदैव उमंगिनि ॥११॥

श्री सीता सतनाम सुधा हृदय माझ मज्जत जोई।
ताको पाप ताप तम कोटिन कलप बिनाशन होई॥
और कौन फल अधिक कहौं सुनि सुख सरसो सब कोई।
(श्री) युगलानन्य रसिक रघुवर वस होत बात नहिं गोई ॥१२॥

इति श्री मधुर मंजु मलायां श्री मद्युगलानन्य शरण विरचितायां
श्री नाम परात्पर परत्व निरूपणं नाम द्वादशो नाम कान्ति
अन्तरगत श्री सीता शतनाम समाप्तम्।